

DPN 6285

① प्रतिष्ठा सार संग्रह पादस्थापन विधि "PRATISTHĀ SĀRA SANGRAHA
② चुलिकारोहन विधि PĀDASTHĀPAN VIDHI
Title: ③ भूमिशोधन वास्तुस्थापन विधि (2) CULIKĀROHANA VIDHI
(3) BHŪMIŚODHANA VASTUSTHĀPANA VIDHI

Run. No. 6976

Cat. No. 6

Micro. No.

VIDHI

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 22 x 8

Folios 41

Lines (in a page) 21/8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

श्यामसुन्दरराम Shyam-sunder Ram

Author / translator

Scribe / donor विप्रगंगाधर / राजेन्द्रश्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 888 / शिववक्त्रे भुजे नागे 825

Ruler / place Vipra Gangadhara / Rajendra

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Leather cover मृगचर्म Shreshtha

Material : palmleaf / paper / thya-saphu /

Picture of a man and yantra.

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः शिवाय ॥ अथ शाल्पे द्वाररा शुभा शुभं लिख्यते ॥ कथयामि प्रसंगेन प्रातिष्ठा च
विधानतः ॥ लिंगे विष्णु तथा सूर्यो वासवोपि दिशोश्चरी ॥ ॥

P.T.O.

15
△ इति तैत्रिज्ञानाचार्ये महातन्त्रे भूमि शोधन वास्तु स्थापन विधिः ॥ ॥
शिवे^१ ~~व~~ कृत्र^२ भुजे त्रैगे मास कृष्ण च चैत्रके ॥ अष्टम्यां शुक्लवारं च
विप्र गंगा धरो लिखत् ॥ ॥

पाद स्थापन

10
अथ पाद स्थापन वसपे विधिः ॥ होमजो ॥ पंचगव्य छपायजो ॥

भूमि शोधन

अथ भूमि शोधनादि वास्तु पूजन विधिं वक्ष्येत् ॥ ॐ अद्यादि ॥ यजमानस्य शास्त्रोक्त
फलकामनार्थं श्री अमुक मूर्ति विष्णु स्थापनार्थं भूमि शोधन शहपोद्धारसा वास्तु पूजन
भूमि स्वनम मज्ञ गिमेत्यर्थं कर्तुं सुव्ययि नमः ॥ ॥

5
सं. ८८८ भाद्रपद शुक्ल तवमी अंगारवार तस्मिन्दिने लिखितं ॥ श्री श्यामसुन्दर
रामेन ॥ शुभम् ॥

20
 15
 तालिनीयात कूट ॥ घंदि
 कूट ॥ वतालित्वा क ॥
 अर्घ्यात् कलम ॥ पूजा
 ॥ जाजा ॥ आवधि ३ वन
 यति ३ ॥ यवधाना जासः
 कलमाठ सिनिधिगा ॥
 कूटायिताल ॥ स्वात्र रुव
 त कर्मवलि यात ॥ दगव
 लि ॥ कीमावी पूजा ॥ धनं
 पादस्त्रायनयात वसय
 जा ॥

10
 5
 रूमिगधनयात ॥ काम
 जा ॥ पूजा ॥ जाजा ॥
 रुवत वलि ॥ स्वासमाल
 का ॥ धनव कलि ॥ लूनः
 मालाकूटि ॥ घं वा मृत ॥
 आवधि ववयति जा ॥ स
 पुनधवि जा ॥ का. क्रिया
 तर्ह्या अनूयत ॥ कर्म
 वक ॥ हंसिकि त्रिक ॥ धा
 नदायक पू ३ ॥ प्रयवा
 तवा वाहिवा दत्त ॥ रुपा

लकीवर्ग ॥ धनं रु घाम
 कययात वसय जा ॥

रूमवलि यात रुवत या
 त ॥ स्वात्र पूजा ॥ जा
 जा ॥ रुवत वलि वा काम
 दगनयिवन वा च के ॥
 समय ॥

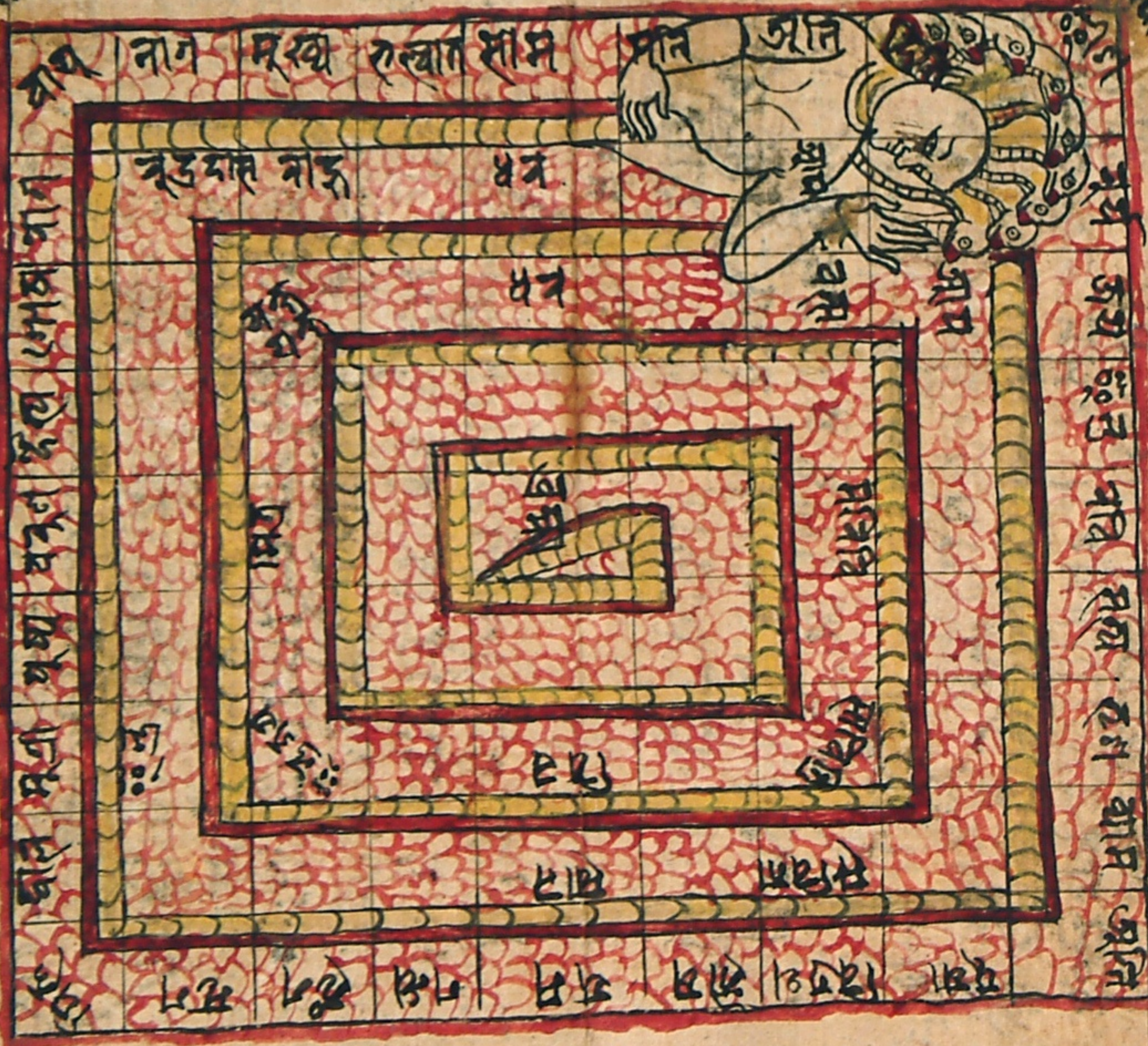
य
 ३
 कर्मव. वडा. ३ कि
 कलु
 ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
 य
 धनं लिला पूजा ॥

अकालीकास

विषली

मायनांगस

पुनीक



कीर

विनादि

कनक

पुनीक

ऊरु

20

15

10

5

[illegible]

गणारुगवलियदानं ॥ उं
 जांरुगथविविधकात्रा
 विदियांरुगनिरुग ॥ याना
 लतलवासिन्यंरुगसर्व
 वाङ्मय ॥ उं उं उं उं उं उं
 वयनभरुगंरुग ॥ उं उं उं
 ॥ रुकुकादि ॥ यियागदि ॥
 उन्मान्यादि ॥ २ ॥ अग्निगंम
 दि ॥ गल, गुन, यानिनी, रुग
 वंदावर्जन ॥ धूप, दीप ॥ रुयः
 माण ॥ अग्निगन्धादि ॥ वलि
 विसर्जन ॥ दणदिगर्भतय
 क ॥ १ ॥ वतरुगवलियदानवि
 धि ॥ ॥ ॥

अथ कल ॥ चूर्न ॥ यजमान
 न ॥ उं अयादि ॥ यष्य राजन
 ॥ वाक्म ॥ यष्य राजन समर्थ
 न ॥ वाक्म ॥ न ॥ उं अयादि ॥
 सुव्रतमस्काद ॥ न्यासाद्यथा
 एज्जालयूज ॥ वेदाच्च नय
 थाविधानेन कल यजनी ॥
 क्वंल कुम ॥ म्नाम्न यज ॥
 निलाल ॥ नमलमन्त्र ॥ उं
 ऊं किं विष्णुव स्वाहा ॥ ॥

विरुतिवल्कायुकावल्कात॥
 उँस्वजविस्वदा॥ ॥नीमिला
 यथदर्वविचिन्व॥स्तानेय
 यामत॥यनरुलस्तान॥स्व

न कल्लोदकनस्तान ॥ चंदन
सिंदूरं यज्ञायवीत वसुस्तु
पुनर्वसुर्न ॥ उं वक्रादुर्न ॥ उं
वसाय विरु ॥ ~~यज्ञायवीत~~

पार्थना वाक् ॥ उं श्रीनिकतः
नमो मम मुखं दवशुवनस्य
त ॥ संकमान्यदिगस्तार्गं य
थावश्यमनादुर्न ॥ वसुक्ति
पुनर्वसुता गेस्य ॥ स्वस्ति नमो
मुत ॥ उपरावगृहीत्वमं कि
यार्ता वासयय्य ॥ रुवश्व
मनस्ता ॥ पूजितं ॥ पुथमं
वा ॥ दवतार्थनित्याश्यामिः
गिला मता नमं गाय ॥ नव
रुवद्विस्तु न कि गिला मता
नमं गाय ॥ स्वपुनर्वद्वि वक्रः
व्यं यथा तथमनगृहात ॥ उं
ऊं श्रीं संकाथं ॥ पुनर्वसुवोधिः
तादृक्का दृष्टायीति यथासुखं ॥

गिला यादुवनवलिधान

वियवाक् ॥ उं स्तान्तिमं याः
निरुतानि पिप्पयात्रा
साग्वया सिद्धिविद्याधनाः
मदवाग्वेव सदा नवा ॥ ता
कुसुं यज्ञविधिवत् पियवाक्
यदाययगविष्णुमूर्त्यमः
स्मार्कं यगाअवदेविहूया ॥
अनेन वलिदानेन श्रीगारु
तिसर्वदा ॥ सुखं न च्छेगातीय
य स्यक्ता स्तानमिदं पुन ॥ ॥
यमनं सकली कलनी ॥ ॥
वाक् न यज्ञं ॥ दक्षिणां ॥
यजमानं अरिषकं ॥ चन्दनं
दिग्गोवीर्वादि ॥ गिला यावः
लिङ्गा न च्छाय ॥ ॥ ॥

चन्द्राय नमः ॥ दिग्विधनी ॥ उं ऊं
ऊं ऊं ऊं रुद्र ऊं ऊं ऊं रवं
स्वी स्वाय रुद्र धावेन ॥ उं ऊं
नमो यत्र मात्मन सर्वसिद्धि
यदायिमा दगे दिग्विधनीमि
नदं रुद्र स्वाहा ॥ दिग्विधनं

15

नमः ॥ निलासुजर्न ॥ स्वस्तिकास
नस्तिका ॥ निर्मकनवालि ॥
अग्निनाहनका ॥ सेयुलनः
का ॥ स्नान ॥ यंचामन ॥ पूनऊ
लस्ताना ॥ यंचगयनस्तान ॥
चन्दन सिन्दूर यक्षापवीत ॥
पूष्य ॥ मूलनज्रादुति पूरु
ऊर्वेन पराग ॥ अर्धधादि ॥ ॥

नमः ॥ विष्णुकर्मस्तिकासुन
स्तिका ॥ उं विष्णुकर्मस्तिकासुन
मासनेनमः ॥ पूष्य ॥ पादा
घा ॥ हस्तार्घ्य ॥ चन्दन ॥ सिन्दू
न ॥ यक्षापवीत ॥ वनालिज
गुहादनविथ ॥ पूष्य ॥ धूपदी
या ॥ सुता ॥ अर्धधादि ॥ ॥

टंकमद्रवदकिगा सरुसमय
ली ॥ नमः ॥ निलासमीयंगत्वा ॥
टंकमद्रवयथादवीविचिन्त्य
॥ उं हनदीकायरुद्र ॥ उं अमा
यरुद्र ॥ टंकमद्रुआर्यगत्वा

यथा ॥ निलादिगविद्रुका
यथा ॥ रुमीनववमुतासी
र्य ॥ ॥ निलादिगविद्रुका
यथा ॥ वृषातादिपंचदिग
॥ अमुमकुं ॥ ॥ यामः
॥ नमस्तुतिवार्यय ॥ ॥ वृषा
मनादिनीनिलाअन्यस्तान
समर्थयत् ॥ वलिस्तुता ॥ ॥
समादादुर्गति ॥ रुता
रुवकयतिस्तिका ॥ ॥

घाटस्तानधनस्तययत् ॥
पीतवमुतायकाय ॥ पूष्यमा
तादिनिधाय ॥ ॥ अवाय
वलिस्तुतानी ॥ वगुमातयत् ॥

स्तुत्यादि ॥ नाडादगयजः
मान आवाय ॥ दक्षपाठि
॥ भक्तिक ॥ पौष्टिक ॥ वाक्पु
प्रजा ॥ ॥ यवधाय ॥ या
यन्विद्रुहामा ॥ दकिस्तानी ॥
संग्रवपातनी ॥ पूरु ॥ उं द

वागमउ॥ आसीता॥ मलुलला
७॥ अन्नादिआनी वृदि॥ ॥
यजमानकलमशिष्यक॥ च
नतसिद्धनसगुलमी वृदि॥
अग्निविसर्जनी॥ कोमावीपू
जा॥ गंखवादिगुनादेयगीत
मंगलया० केगजग्यशसाम
मनेयु कृजने समनादने
॥ गी० वे० संपूजितं लिंगं पूज्य
धूपदीपकेषां गंधविह्वलि
तं लिंगं मानयत्स्वपूर्ववधु
लिना जानयता॥ बालसर्जस्व
स्य इत्त॥ दाकं विचमाल॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हं मत्रियापुसविशास न स्वयावा
वात्तवावृये ॥ यदुपि रुरिपिह
मग्निवृद्धस्य तिवृद्धा वृत्ताने
नोजसाग्निना दत्तं उसासाभेन
नाह्ना विह्वलनादं गीमादवतया
यस्तु ० यस्यामि ॥

हं नमानगवतवासुदेवाय ॥
अथदद स्थापनरुमयकमास
दिमासागुवागमदधन॥ य
यागमयविजसमी॥ ययत्राय
न॥ तदननगुरुदिवसगक
चाथेनरुतवलिपुदाने॥ ॐ
अथादि॥ यजमानस्यमासा
कुरुलकामनार्थं हतवत्या
वतवाक् ॥ ययराजन॥ ॐ
नतमहानन्यासार्वपाणकजा
॥ वलिपुजने॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
रुतव्येनयनमरुतव्ये ॥ ॐ
दं गंधधूपधूपदीपार्थं वलि
गृद्धं रक्षातिक्रूरस्वादा॥ ॥
ॐ स्वादि॥ ॥ अग्निर्तामसदि
॥ पुयागमदि॥ दृष्टकादि॥ व
ह्नाद्यादि॥ समयवलि॥ अ
जनादिवलि॥ ववगरीया
गिनीवलि॥ वतीमियागिनी
वलि॥ ॥ दूपदीपजायका
॥ ॐ सर्वकृपाधिनार्थं ॥ रा
जस्यमादि॥ ॥ देवस्थाप
नं पुयावाकायावदलिहसं

यथायत्नं वलम् ॥ ततानुका
शीकाष्टयुजने ॥ ॥ समस्त
मिकावयवम् ॥ यीतवत्तुम्ह
कापक्रिया ॥ यनं दत्तव ॥ द्वा
स्तितव ॥ य ३ ५ कृच्छ्रवत्तु
यकं किवत्ताया ॥ यद्वा सने
मलुलयाल ॥ कागवत्तुनाक
यसिम्हनेनवा ॥ एकाशीः
काष्टकवयवम् ॥ ॥ एका
शीकाष्टक ॥ लनेष्टाष्टक
ली ॥ निर्मर्च्चनवलि ॥ अग्नि

रा० उ० सोखाय रा० उ० मानवाय
 रा० उ० सुखाय रा० उ० पापरा
 रा० उ० मरवाचकाय रा० उ०
 नागाय रा० उ० मर्मराय रा०
 उ० स्वनायाय रा० उ० सामाय
 रा० उ० अननाय रा० उ० उल्लिख्य
 रा० रा० उ० वृकाणीकाय रा०
 रा० उ० कायसवेरा रा० ॥
 वद॥ उ० स्थाना पथिवि॥ उ०
 वृक्षयज्ञान॥ उ० वाक्मसा
 ॥ उ० वृक्षमसा ॥ उ० आवृक्ष
 वाक्मसा ॥ ॥ उ० वृक्षमसा ॥

तनावा मुयात आ इति ॥ १०
 रा० उ० वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 उ० वाक्मसा ॥ वृक्षमसा ॥
 ॥ ॥ वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 उ० वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 मिदद वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 ॥ ॥ वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥

नि॥ अ० वृक्षमसा ॥

कायानिकायमर्ज॥ उ० उ० अ०
 मुयात ॥ वृक्षमसा ॥
 वद॥ उ० अ० कर्मकर्म ॥ अ०
 इति ॥ उ० उ० अ० मुयात ॥
 वृक्षमसा ॥ १००० ॥ वृक्षमसा ॥ उ० अ०
 कर्म ॥ वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ उ० वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥

तनावा मुयात आ इति ॥ १०
 रा० उ० वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 उ० वाक्मसा ॥ वृक्षमसा ॥
 ॥ ॥ वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 उ० वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 मिदद वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 ॥ ॥ वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥
 वृक्षमसा ॥ वृक्षमसा ॥

रुवायच ॥ **अथ नय एताना ॥**
 उवाचीं विष्वक्कर्माणि ॥
 दमासर्त ॥ **पृथ ॥** **आना**
 द्विगुर्जयीनदहमु जठाध
 वीकडासन ॥ **विष्वक्कर्माणि**
 दागेया स्नानमडाकमु
 डाकमु गुरुत ॥ **आनयुष**
 २ ॥ ॥ **यादार्धहस्ताधच**
 नदन सिद्धव यज्ञोपवीतार्ज
 कादनपृथ ॥ **षट्पु**
 जर्त ॥ **उवाच दयादिषट्पु**
 ग ॥ **व्यादि ॥** **वेद ॥** **उवाच**
 विष्वक्कर्माविमनानायादि
 आदिदायाधताविमनाः
 पत्रभासदक गयीमिस्तानि
 समिधामदनी यगामफस
 वीयत्रकमाद्रे ॥ **आहूति**
पृथ ॥ **उविष्वक्कर्माविमना**
॥ अथ नय एताना ॥ **पृथदीयडा**
यस्ताना ॥ **उविष्वक्कर्मायग**
द्यापि ससावसु दिकानक
अथ नय एताना ॥ **विष्वक्**

दा

स्नानमाहुत ॥ **अथ नय एताना**
 ॥ **विष्वक्कर्मादि** **पृथ** **या**
 आदकनसंथाक ॥ **म**
धचननर सनस्वसि
लिखत ॥ **स्वसि** **कपृथ ॥** **उ**
धर्माय ॥ **उधर्माय ॥**
उमिवाय ॥ **उमिवाय ॥**
दयादिषट्पु **नय**
उवाच दयादि ॥ **पत्रभास**
॥ अथ नय एताना ॥

कदाविमि **उर्त ॥** **कदावि**
दादितासदसमर्पनवा
॥ उवाच कागोको **निरुदवा**
सोविष्वक्कर्मा **को** **क**
दानं गुरुता मनु **खनन**
नसापत ॥

विष्वक्कर्मा **निरुदवा** **खनन**
हाननगता ॥ **खनन** **यथ**
दिगसाखवा **॥** **उस्व**
दानवपत्नी **रुमिखनन**

मन्त्राविव कर्माभूतिर्यत् न
 भामुवाकमुक्तं ॥ ॥ उक्
 दाने दायि योता कीनकाटि
 सट्टिपि। कर्मणां यथीवीद
 वी। विमृशयनरुतव ॥ वा
 क्षानाय उमानाता मावाय
 विष्य कर्मना। सर्वेषां मंगल
 वास्तु तनय ॥ कर्मना ॥
 अमुक्तं ॥ उक् अमुक्तं
 रुद ॥ वास्तु तनय स्वस्ति वा
 य ॥ ॥ नाना मंगलका
 नय ॥ गृवाल खननं मृत्
 कावर्तिनिधाय ॥ उक् अ
 का। उक् पुत्रिया ॥ उक् अ
 काशी काक्षे सर्वं क्रियता ॥
 नृपियं खननं ॥ ॥ यज
 मानन खननं कर्म मंगल
 यिष्यालय य ॥ ॥

कलारिषक ॥ अत्र पिय
 ल्या ॥ लाजा रिषक ॥ यमिष्ट ॥
 गंक्षा वायुलियथ विधानन
 वलिकर्म कात्रय ॥ ॥ मृ
 रिक्ता वा नगवलि दश वा

प्रक्रिया ॥ ॥ संख्या इति ॥ ना
 जाद गय जमाना वीयर्कः
 आइति ॥ गतिक ॥ योवि
 का। देम यादि ॥ ॥ विदिहा
 म ॥ वीयवर्तिका इति ॥ वास्तु
 तनय उक्ता ॥ ॥ वलिविस्त
 न ॥ दक्षिण दान ॥ ॥ प
 उदवागा ॥ आर्मा ॥ ॥
 जायमं तुलसा ॥ अमुक्तं
 दि ॥ ॥ यरुसिंहा मना रु
 यजमान स्वस्ति संकान ॥ नि
 मं कन वलि ॥ अत्रिषक ॥
 वन्दन सिन्दूर मंगल मंगी
 वीद ॥ दस्वापि स्वावलिया
 यमं काय ॥ गंक्षा वायुलिय
 यथ ममय दाने वी ॥ प
 गृवाल मंगल ॥ ॥ अमुक्तं
 नृपियं मंगल ॥ यतिरुमा
 वेमं गृवाल मंगल न विधि
 समाकशा ॥ ॥ ॥

सं ६६६ वैशाख शुक्ल प

२ अथ यादव स्थापन विधि वक्ष्यते ॥
 वाक्मन्त्रादयः काल्य ॥ रुतवलि
 यागश्च यजुर्न ॥ रुतनामा रु
 तव ॥ गलवदक रुत ॥ रुत
 कादि ॥ अगिर्तामादि ॥ वक्त्रा
 नादि ॥ नवात्मा ॥ स्वस्वमनु
 तवलि विद्य ॥ वद ॥ उगल
 नात्मा ॥ उ नमा वद साय ॥ उ
 अम्ब अम्बिके ॥ उं चर्तय गा
 उं विग्वत न्यद्र ॥ उं यात्रीदि
 लास्याद्रा ॥ धूमदीप जाय
 साग ॥ उं लि वलि ॥ उं पूर्व
 दक्षिणयन्त्रिमा ॥ अगुगि
 दि ॥ वलि विमर्जन ॥ कृपा
 तस्तानस ॥ कृपातमलुयदा
 यक ॥ धूमि वलि पूजन ॥ ॥

यज्ञमलुय विग्व ॥ यं च ग
 यसाधुर्न ॥ दवाग्नि यजुमा
 नयोर्त ॥ यजुमानन ॥ उं अ
 यादि ॥ यजुमानस्य गमक
 रुत कामनार्थ आत्मनादग
 यो विष्णु स्थापनार्थ यादव स्थाप

न निमित्तं वाक् ॥ यथा
 रुजर्त ॥ वाक्मन्त्रादयः काल्य
 उं अयादि ॥ गुननमस्तान ॥ ॥
 न्यासादयः आत्मयुजा ॥
 वाक्मन्त्रादयः काल्य कर्मका
 नय ॥ कलमवर्तनी ॥ घता
 इति ॥ गिता इति पूजु ॥ ॥

यथा यज्ञवत्तम ॥ यज्ञवत्तम
 नकार ॥ रुतवलि कृपात
 विद्य ॥ ॥ तासु कुरुनवत् ॥ ॥

पूर्व ॥ रुत ॥ रुतवत्तम ॥ उग
 वत्तम ॥ यवावीदि ॥ ॥

अथ यज्ञ ॥ सूर्यकान्ति मित्र
 तमनगील चट इति ॥ चावी
 दिश ॥ यज्ञकालिका ॥ ॥ २ ॥

दक्षिण ॥ रुत नील ॥ अं ॥ यं
 गममाधि ॥ वक्यन्दन ॥ रु
 मल ॥ ३ ॥ ॥

३ दिवलि

20
नेमः ॥ मेहानील ॥ कां ॥
स्वर्गमादि ॥ जगुलि मास ॥

पन्थि ॥ मूति डाका पाधन
वागघनि रुक्तासि ॥
लिवावा ॥ वीदि ॥ ॥

15
उरुन ॥ यद्मनाग कां ॥
द गंधक रुक्ता कूर्त धीदत
व नाहावादन व वीदि ॥ ॥

॥ ॥ ॥ वेदर्थ फल ॥
यति गीख कनि र्थ ॥ ॥

10
मधुस ॥ सर्ववत्त समध
उ सर्वडाषधी सर्वदधः
रुतिक स्वर्गमास सर्ववीदि ॥
म्यात मंग सर्ववत्त जतय
थागकि निधाय इर्वागत
सर्वकुरु निधाय ॥ ॥

5
लीपिका ॥ लीनाग ॥ ली डाहाप

ली ॥ लीकर्म लीगवु ली
योदका लीनक्त मेलि ॥
व्यग्म मग पिनुत व कर्माग
ला गलीनयात व ॥
कस्तु नि कपन ॥ मनायन
धीरवगु वीकमे ॥ निधिर्व
याइ वतल यत ॥ अत सवि
पवीगस्यसि कवाय ॥
सगीधले र्थन ॥

थग रुस्यसि कसत याव ॥ क
लन र्थ वासत ॥ वद ॥ उ वु
यज्ञाने ॥ उ विद्व ॥ उ न
म ॥ शिवायव ॥ उ सदस्य
षी ॥ उ गीग्वत ॥ उ गीग्व
॥ उ म म म गीग्व ॥ उ गीग्व
त ॥ उ न रुग्वय ॥ स्वाहा ॥ उ
निवाना मासि ॥ ॥ उ द धि
काया ॥ उ न न्वदावा ॥ ॥ म म
या ॥ ॥ म र्थ ॥ ॥ म र्थ ॥
नथ ॥ ॥ कवाय ॥ उ विपुत्र
नाटमसि ॥ ॥ पत्तव ॥ उ

ॐ देविष्णु ॥ ॥ यन्मायम् ॥ ॐ
यद्मानने ॥ ॥ यन्मायम् ॥ ॐ
मिडे ॥ ॥ गन्मायधी ॥ ॐ या
उषधीमा ॥ ॥ यन्मायम् ॥
ॐ वाचकम् ॥ ॥ गन्माय
दक ॥ ॐ ॐ मीमगी ॥ ॥ ॐ
लादक ॥ ॐ या ॥ रुतिनी ॥ ॥
मीमगी ॥ ॐ मीमगी ॥ ॥ ॐ
नलादक ॥ ॐ दिन ॥ ॐ गङ्गा ॥
॥ ॥ रमा ॥ ॐ मीमगी ॥ ॐ मीमगी
कान्तामिर्मुयतिम् ॥ ॐ ॐ
कषायमानायपलमुना
षा ॥ अदिनपमसासन्
स्वतिनादवीरावाविष्णु
नदीति ॥ ॥ रमा ॥ ॐ मीमगी
जीवन्मयुजनी ॥ ॐ मीमगी ॥

निर्मलनवलिअग्निनाद
वन्मायम् ॥ ॥ यन्मायम्
ऊनकर्मनलानकोवयम्
॥ कलननधूनक ॥ ॥ ॐ
न सिद्धव सगुन मरुआ

नितियतिम् ॥ ॥ ॥
लखमानधयकावयम् ॥ ॥
विनस्वमिकमतयाव ॥ ॥
नी ॥ नववस्वमयकाय ॥ ॥

ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
निधिदमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
अम्मी ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
वायो ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥
ॐ ॐ ॥ ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥

ॐ ऊ ॥ अमुयक ॥ ॐ मीमगी ॥

ॐ कौमुदितामममशा ॐ कौ
ॐ अयमाजिताय ॥ ॐ कौ
वाविजयाय ॥ ॐ कौ
अमलाय ॥ ॐ कौ
कुयिर ॥ ॥ ॥

निधिरुवदनयजन ॥
ॐ समुद्र उवागलिलस्य
मधनाय नानाय नून
विष्कना ॥ ॐ दयावः
जीवधराननाठजाया
दवीविहमावदु ॥ ॐ
ॐ ममगगा ॥ ॐ अजि
घो ॥ ॐ यवनय ॥ ॥ न
दादि ॥ ॐ यमयय
जन ॥ ॥ नन्द ॥ ॐ नासि
मविहविहानयायम
यनितिरुसज आनन्दन
दावातामरुग ॥ साहस
ययस ॥ ॐ दयायय
मासिदिगिनाजापति
स्तिता ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ स

ॐ जगज्जितामममशा ॐ कौ
तिष्ठुरग ॥ रुडा अयन
रुडा ॥ यमयय रुडम
नयन ॥ रुडम रुडम
मत्समा ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ
यनाममत्समासदावः
स्तिनातन ॥ रुडा ॥ ॐ
ना ॥ वनामोत अलिष्टि
रिथा ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ
वारुवविहग आगुरुव
वायवयय रुडम रुडम
मरुन ॥ यनीषवा मातामि
दीवा ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ
जिथारुवयजायोमान
धीरु ॥ रुडम गिनामय
वाययिवी अलिमावीम
तनिह ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ
दिनयमग ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ
वयवय ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ
याडा ॥ रुडा ॥ ॐ
रुडम रुडम रुडा ॥ ॐ
वयवय ॥ ॥ रुडा ॥ ॐ

20

15

10

5

5

10

15



20

15

10

5

5

10



[illegible]

मूर्क मूर्क्य ॥ १ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥
 धियतय नूडांय ॥ २ ॥ ॐ तमो म
 नी ॥ ३ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥ ४ ॥
 कुल मूर्क्य धियतय नूडांय ॥
 ॥ ५ ॥ अर्क मूर्क्य ॥ ६ ॥ ॐ वाय
 मूर्क्य नमः ॥ ७ ॥ ॐ वाय मूर्क्य
 धियतय नूडांय ॥ ८ ॥ ॐ त
 व वाय ॥ ९ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥
 ॥ १० ॥ ॐ अर्क मूर्क्य धियतय म
 द वाय ॥ ११ ॥ ॐ वाय मूर्क्य ॥
 ॥ १२ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥ १३ ॥ ॐ
 पतय हीमाय ॥ १४ ॥ ॐ तमो म
 नी ॥ १५ ॥ ॐ वाय ॥ १६ ॥

ॐ अर्क मूर्क्य ॥ १७ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य
 धियतय नूडांय ॥ १८ ॥ ॐ यात न
 द ॥ १९ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥ २० ॥
 मूर्क्य धियतय मूर्क्य ॥ २१ ॥ ॐ अ
 र्क मूर्क्य ॥ २२ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥
 ॐ अर्क मूर्क्य धियतय ययुय
 तय ॥ २३ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥ २४ ॥ ॐ
 यजमान मूर्क्य ॥ २५ ॥ ॐ यजमा

नमः मूर्क्य धियतय ॐ अय ॥ २६ ॥
 मूर्क्य ॥ २७ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥
 ॥ २८ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य धियतय नूडा
 य ॥ २९ ॥ ॐ तमो म नी ॥ ३० ॥ ॐ अ
 र्क मूर्क्य ॥ ३१ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य धि
 यतय नूडांय ॥ ३२ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य
 ॥ ३३ ॥ ॐ वाय मूर्क्य ॥ ३४ ॥ ॐ वा
 य मूर्क्य धियतय नूडांय ॥ ३५ ॥ ॐ अ
 र्क मूर्क्य ॥ ३६ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य धिय
 तय मूर्क्य वाय ॥ ३७ ॥ ॐ नमो व
 र्क्य यव ॥ ३८ ॥ ॐ अर्क मूर्क्य ॥
 ॐ अर्क मूर्क्य धियतय हीमाय
 ॥ ३९ ॥ ॐ तमो म नी ल वाय ॥
 ॥ ४० ॥ ॐ अर्क मूर्क्य धियतय म
 ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥

ततः यव ततः ततः धनी ॥ ४२ ॥
 पृथ्वी मूर्क्य ॥ ४३ ॥ ॐ पृथ्वी मूर्क्य
 धियतय वामाय ॥ ४४ ॥ ॐ सोमा
 य धिय ॥ ४५ ॥ ॐ आय मूर्क्य ॥
 ॥ ४६ ॥ ॐ आय मूर्क्य धियतय ॥

ये २॥ उं न्रा पादिदा ॥ २॥ उं
नै उ मरुथि २॥ उं न उ मरु म
ल्य क्रिया ये २॥ उं न आ सि ॥
२॥ उं वा य मरुथि २॥ उं वा य म
ल्य धिय ग य ज्ञाना ये २॥ उं न व
वा य ॥ ४॥ उं आ का न मरुथि
२॥ उं आ का न म ल्य धिय ग
य न्का ये २॥ उं नि वा ना मा ॥
५॥ उं न्ति य मरुत ॥ ॥

यि तत् ॥ उं आत्म तत्वा य २॥ उं
आत्म तत्वा धिय ग य य न्का ये २॥ उं न
यज्ञा नी ॥ ५॥ उं वि या तत्वा य २॥ उं वि
या तत्वा धिय ग य वि षु द २॥ उं
वि षु व ना ट ॥ २॥ उं नि व तत्
य २॥ उं नि व तत्वा धिय ग य न्का
य २॥ उं न म ४ नी र वा य व ॥ २॥
उं न्ति यि तत् ॥ ॥ ॥

नि धि व मरुदि न्का य न्का ये २॥
य उ न कु म दा स्व स्व म न्का ये २॥
इति ॥ स दान स वि सि ति क

मन आ इ ति य ति क ॥ ॥

तत्ता वि ष्व क मरुथि २॥ य द्वा रि
मरु व न स सि का स न सिं ला ॥ उं
वि ष्व क मरु लो द मा स नी २॥ य
वी २॥ पा दा र्थ ॥ रु स्त र्थ ॥ य न्द
न ॥ सि न्द न ॥ य र्था प वी त य ष
॥ ध्या नी ॥ उं दि गु डी यी त द ह
मु ॥ य यी ड लि ॥ उं वां वां वं व
वि ष्व क मरु लो २॥ ३॥ व द ॥ उं
उं वि ष्व क मरु वि म ना आ दि दा
या धा ता वि धा ता ॥ ॥ ध य दी
पे र्ता ॥ उं वि ष्व क मरु ति मं मु
र्य उं ला च्छ स वि का न का यः
थां सू ध क न र्था वि वि ष्व क मरु
त मा मु त ॥ अ य नी धि ॥ ॥
आ इ ति ॥ उं वि ष्व क मरु वि म ॥
वि ष्व क मरु रु स्त ग न्द य न्द न न
स्व सि कं लि य त ॥ स्वा न अ रु त
त ॥ अ मु म कुं वं वं नि धि कं
रु वि स र्ज न ॥ ॥ य उ मा न न
व र्ग लि अ ट वा द कि ता द्रा य ॥

20 वाक् ॥ उं गिरु स्काय दावदी
ॐ धर्मव क संयुत भवि पुष्काय
न कर्माति यथा कुरु लकाय
या ॥ ॥ विष्णु कर्मा विष्णु कर्मा य
उमात याद स्काय नरु मिग
त्वा ॥ ॥ गजावाय न ॐ धर्म
विमानता मुन रुमोय वादि
खनयतु ॥ ॥ ॥

15 अर्घवागुलखनहाय ॥ उं ऊ
अमुय रुह ॥ ॥ धर्म ॥ उं ऊ
रुदयाय ॥ ॥ समीकवर्ष ॥
ऊं कवचाय ॥ ॥ ताउनी ॥
10 उं ऊ अमुय रुह ॥ ॥ ॐ ति
वउसंस्काय ॥ ॥

5 आग्नेयादि ॐ गमनाक ॥ य
वादि म धर्म पीतवूरुन द
हिना वरु स्वर्ग कलिखत ॥ ग
वावीहिदाय ॥ ॥ सवर्गुन उत
यनीनिधाय ॥ ॐ धर्म मयं वरु
रुतिगु सरु वायय ॥ ॐ स्वर्ग

वायं वाक्कामन ॥ ॐ ति म न
रुहस्य ॥ ॥ ॥

यननं व कायस्य ॥ वहुसंस्क
र्ग ॥ स्वर्ग कलिखत ॥ सवर्गु
न उत यदा ॥ ॐ धर्म मयं वरु
यनीय ॥ यउमानस्य निधि
कीरुदय कावयाद स्काय नथा
यसवत ॥ ॥ यनव घटान
कल ॥ ॥ कनारु कली ॥ स
वर्गुन उत यमीति धाय काय
काय ॥ आग्नेयादि ॐ गमनाक
॥ यवादि उरु नार्क निधि क
मुतिधाय ॥ ॥ सवर्गु कायस्य
वर्गुनागत ॥ उं तां सवर्गु नि
मित्तनागमसनाय ॥ ॥ त
स्याय निनिधि क ॥ उं यां सवर्गु
यवम ॥ ॥ तस्याय विमवर्गु नि
मित्त रुव वाय नूत वा ॥ उं
गंगवर्गु सनाय ॥ ॥ तस्या
यवि सवर्गु निधाय ॥ उं ऊं श्री
धर्मनागक य ॥ उं ऊं कालाग्नि

वृडायश ॥ तस्यायनिम्वरम्
याइका ॥ उं यों या इक र्याश ॥
तस्यायनि अतन मूर्ति ॥ उं ऊं
सः अतन मूर्ति यन सः ॥ ॥

वीहिनयास्मिदं हं ४ धावन ॥
वीथयवा ॥ १ ॥ आरगथसका
॥ दकिमहास्त्रा ॥ तेरलसमा
सा ॥ पन्थिमनका ॥ ७ ॥ वा
युवा रंका ॥ ४ ॥ उरुनका
नंतेवनाहावादनवा ॥ १ ॥
गंगमनस्यक ॥ ६ ॥ मक्षस
सर्वव्रीहिद ॥ २ ॥ ॥

पयका ॥ आदूवा ॥ हाकवा
३ ॥ हायवा ॥ गायवा ॥ क
नावा ॥ ३ ॥ उयवा ॥ गायिव
वार ॥ मक्षस उयवा ॥ ॥

मक्षसकू मीमला माभापय
न ॥ तलिनी पातनयायावन
॥ उं कुं कुं कुं कू मीमनायश ॥

कूमनितातस्यदव या आस
नतादयानकंद ॥ ॥

तातनवकाथयुजनी ॥ अग्निः
मादिग्गानार्क ॥ उं नन्दायश
उं रुडा यश ॥ उं जया यश ॥ उं वि
कायश ॥ उं पूरुयश ॥ ॥ उं
अतिगायश ॥ उं यनाजिताय
श ॥ उं विजया यश ॥ उं अमना
यश ॥ पूर्वदिउरुनार्क ॥ ॥
उं धूमसि ॥ २ ॥ उं सरुजायश
॥ अतन ॥ ॥ उं ज्ञानाय
श ॥ उं विरुडा यश ॥ नेजर्षी ॥
उं वृं वेनाज्ञानायश ॥ उं मूनना
यश ॥ वायु यश ॥ ॥ उं नेव
नायश ॥ उं पूषन न्दायश ॥ ॥
॥ ॥ उं धूमसिनायश ॥
उं जयायश ॥ पूर्व ॥ ॥ उं ज्ञ
ज्ञानायश ॥ उं विजयायश ॥ द
कि ॥ ॥ उं वृं अवेनज्ञायश
उं पूरुसिनायश ॥ पन्थिम ॥ ॥
उं अनेव यश ॥ उं अमना

यशः ॥ ॐ आध्यात्मिकं ॥
यशः ॥ ॐ कालात्मिकं ॥ ॐ
अनन्तासताय ॥ ॐ भवतो ॥
॥ मन्त्रकार्यं ॥ ॥ पूजन
कुमल आशुतिस्वस्वमन्त्रेन ॥
वनपरा ॥ ॥ ॥

तत्त्विकं ॥ वतालिङ्गत्वा
कध्यासाय ॥ मूलत आशुति
॥ १०८ ॥ ॐ स्विनारुवा ॥ ॥ आ
यसधियुक्तं ॥ ॥
उत्तमनन्दिनितिर्वालीय
स्वायाम्यहं ॥ यसादतिदृष्टं
दृष्ट्वा यावच्चन्द्राङ्कं गानकः ॥
आयकामधियतन्त्रद्विद
दिसद्विना ॥ अस्मिन्नन्तास
दावया यासादयत्तत्त्विकं
॥ ॐ नास्ति मन्त्रिर्ह ॥ ॥ ॥

नेम्य ॥ ॐ रुद्रं सर्वसदारुद्रं
लाका नाकं नकास्यव ॥ आय
दाकामदादवी ॥ ॐ दायस

दारुव ॥ ॐ रुद्राभा ॥ ॥ मन्त्र ॥
ॐ जयगुरुमहादेवी तिष्ठत्य
स्वायिर्मया ॥ तिर्यं जयाचरु
यय स्वाभिनारुवरा नवः ॥
ॐ यनासमत्सता ॥ ॥

ॐ नान ॥ ॐ त्रिकं त्रिकं चदा
मर्घं सिद्धि न कथं ॥ ॐ रुद्रं
वदा सर्वदं ॥ ॐ त्रिकामिनी
मन्त्रिणी ॥ ॐ स्विनारुववी
गजगुलं विवाद्यवपुर्धुव
सुखदस्यम ॥ १०८ ॥ पूनीयवा
सावीमातत्रिर्ह ॥ ॥

युक्तादिउक्तं नान्तरुद्रा
जया त्रिकं सर्ववत् ॥ तन्मन्त्रं ॥

मन्त्रं सज्ज ॥ ॐ स्विनारुव
पुर्धु ॥ ॥ वाक्पुण्यजमानक
लमीनधिस्यं तय ॥ ॐ अयवा
नाहकल्य ॥ ॐ अयादि ॥ ॐ प
वमन्त्रं नधर्मं स्नानविद्वा

ननु यैः । तयसवायना गाय
 यन्माययन् मायव । लाकानां
 लुरुदत्तार्थं स्त्रिभारुवः सखा
 सन्त । तिर्यद्वत्तमदादवी पुण्य
 हं यन्निवर्तना ॥ यथगाययं
 जमानाय सर्वकामरुलीगुप्त
 । वाकुगान्तिजयीवाजा सुखि
 र्यं सर्वदा तथा ॥ सस्त्रिकियाय
 धर्मेषु सुखिकावाग्धमववा
 हं मन्त्रकयदानतत यथकाटि
 गुलधजा ॥ वाजाविजयमाधु
 तिदीर्घायुर्तिनूयद्वीचिल
 श्याल्यतैयथी धनधन्यय
 र्गमरिता ॥ यथायजायते स्का
 न् । एतस्मिन् वसुवर्द्धगायुजि
 तायजमानाय एतयारुवतु
 सर्वदा ॥ स्वस्वसर्वतिकागर्व
 सखीसन्नायसीरुवशोयावच्च
 नुस्यसूर्यस्य तावत्तचस्त्रि
 रुव ॥ ॥ यथैव वसुदायि
 या सर्वसदाहलकादा सर्व

संपूर्णमवापु कलस्त्रीगित्रसी
 त ॥ ॥ वद ॥ एगितारुवपुजाः
 स्थानान्धीर्यः त्वमीगित्रयाया
 वायधिबीजरिमावीमात
 त्रिर्द ॥ उं यावतीघ्रावायधि
 वीयायवस्यसिन्धवावित
 स्त्रिन् । तावत्तुमिदुतयदः
 मूर्जगद्गाम्य स्वातं मयिग
 द्गाम्यकर्त ॥ उं मयित्यत्रिः
 त्रिर्यद्वत्तमयिदका मयिद
 तु । घमस्त्रिषुविनाउतिवि
 वाजातिका सहवृत्तगजसद
 ॥ यजमानस्य गमका कुरुल
 कामनार्थं आत्मताद एत
 मकमरिणीविषुस्कायनार्थ
 यादस्कायतस्त्रि वस्कायस्त्रि
 तारुवश ॥ ॥ इति स्त्रिन्वाक्य ॥

तावत्तयतिर्वातविमद ॥
 उं लीं लीं लीं लीं ॥ उं लायवलि
 गद्ग २ स्वादा ॥ उं ॥ उं ॥ उं मु

20 मरुतादीकः सदसुगुगजा
सतहावजहसुमहाकायन
मरुयदीदेकन ॥ जयगन्धदि ॥

जयनय ॥ उं नो नो नो नो नो
नयवलिगृह २ स्वाहा ॥
सा ॥ उं अग्नययनयनका
यिंगमकयिंगकगक ४ गकि
हसामहाक ५ कागसुवाग्न
यनम ॥ जयगन्धदि ॥ ॥

यम ॥ उं मां मां मां मां मां
वलिगृह २ स्वाहा ॥ सा ॥
उं कतानकसुगुगर्गवः दधुहः
साहयकन ॥ महिषसुमहा
वीर्या नमस्तुदकदिक्कन ॥ ॥

5 नेज ॥ उं कौ कौ कौ कौ नेज
यायवलिगृह २ स्वाहा ॥
सा ॥ उं नेजयायनयनका
खद्रहसुमहावन ॥ वकाका
कदलवयनेज यायनमा मुता ॥

वनम ॥ उं वां वां वां वां वनम
यवलिगृह २ स्वाहा ॥ सा ॥
॥ उं वनमीमाधनाडिमु या
गहसुमहावन ॥ सर्वलिः
कालसयक यग्यमदिक्कन
नम ॥ जयगन्धदि ॥ ॥

वायव्य ॥ उं यां यां यां यां वा
यवलिगृह २ स्वाहा ॥ सा ॥
॥ उं वायव्यायनयनका
धजहसुमहावन ॥ सर्व
गसर्कग्येव वायुदवनमा
मुता ॥ जयगन्धदि ॥ ॥

कनम ॥ उं सां सां सां सां कन
नायवलिगृह २ स्वाहा ॥ सा ॥
॥ उं सो व व यनयनमा
कसेघनसयत ॥ उरुनाय
तियकुदी गदाहसुनमा मुता ॥

गीगान ॥ उं हाहीहू कौं गी
गीनायवलिगृह २ स्वाहा ॥

[illegible]

दि० ॥ पुरु० ॥ श्रुवनपूरणम् ॥
 मध्याह्नमूलन आहूति ॥ ॥
 म० ॥ उ० याः इति ॥ आ०
 धि० ॥ उ० आ० ॥ ता० आ० मूलिका
 म० ॥ उ० म० आ० ॥ य० म० ॥ ॥
 स० ख्या० इति ॥ वा० आ० द० ग० य० उ० माना
 वा० म० न० आ० इति ॥ क० म० वलि० द० ग०
 वलि० ॥ द० ग० म० पा० द० न० ॥ म० ति० क० ॥ यो
 धि० क० ॥ य० व० धा० न्या० दि० ॥ दी० य० द० हि
 का० ॥ वा० म० ग० य० उ० न० ॥ वलि० वि० स०
 ऊ० न० ॥ ॥ द० ति० क० ॥ ॥ उ० द०
 वा० ग० उ० ॥ प० ग० ॥ आ० स० सा० ॥ म० उ०
 ल० सा० ॥ म० उ० न० धा० दि० ॥ ॥ य० म० वि०
 स० ऊ० न० ॥ य० ली० ग० ति० ध० क० ॥ य० उ० मान
 ले० ति० का० स० न० य० रू० सि० सा० स० ना० रु० न०
 सा० य० ॥ नि० म० न० क० न० वलि० ॥ क० ल० न०
 रि० ध० क० व० न० ना० गी० द्या० दि० ॥ आ० न० धि०
 य० ति० क० ॥ य० रू० वि० स० ऊ० न० ॥ ई० र० वा०
 पि० र० वा० द्या० य० रू० न० स० ॥ को० मा० नी० य०
 जा० ॥ सूर्य० सा० गि० ॥ ॥ नू० ति० वि०
 म० म० न० य० ति० क० सा० न० सी० य० द्या०
 द० रू० य० न० वि० धि० स० मा० क० ॥ ॥

दि० ॥ पुरु० ॥ श्रुवनपूरणम् ॥
 मध्याह्नमूलन आहूति ॥ ॥
 म० ॥ उ० याः इति ॥ आ०
 धि० ॥ उ० आ० ॥ ता० आ० मूलिका
 म० ॥ उ० म० आ० ॥ य० म० ॥ ॥
 स० ख्या० इति ॥ वा० आ० द० ग० य० उ० माना
 वा० र्ग्य० न० आ० इति ॥ क० र्म० व० लि० द० ग०
 व० लि० ॥ द० ग० म० पा० ट० न० ॥ ल० म० ति० क० ॥ यो
 धि० क० ॥ य० व० ध० म० या० दि० ॥ दी० य० द० हि
 का० ॥ वा० म० ल० य० उ० न० ॥ व० लि० वि० स०
 र्ज० न० ॥ ॥ द० कि० म० द० न० ॥ ॥ उ० द०
 वा० ग० उ० ॥ प० र्गु० ॥ आ० स० सा० ॥ म० लु
 त० स्ता० ॥ म० लु० न० धा० दि० ॥ ॥ व० म० वि
 स० र्ज० न० ॥ य० ली० ग० लि० ध० क० ॥ य० उ० मान
 ले० सि० का० स० न० य० र्ज० सि० सा० स० ना० रु० न०
 स्ता० य० ॥ नि० र्म० न० क० न० व० लि० ॥ क० ल० न०
 रि० ध० क० व० न० द० ना० गी० द्या० दि० ॥ आ० न० धि
 य० ति० का० ॥ य० र्ज० वि० स० र्ज० न० ॥ ई० र्वा
 पि० र्वा० द्या० य० स्ता० न० स० ॥ को० मा० नी० य०
 जा० ॥ सूर्य० सा० ग्नि० ॥ ॥ नृ० ति० वि
 म० म० त० य० ति० का० सा० न० सी० य० द्या
 द० स्ता० य० न० वि० धि० स० मा० य० ॥ ॥

२०
 १५
 १०
 ५
 ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ वृत्तिका
 प्रादुर्न विधिः ॥ ताम्रसिन्धु ॥ ॐ
 अथादि ॥ ॐ भाद्रपदकावति ॥
 पृथ्वीराज न ॥ ॐ सिद्धि वस्तु ॥
 यजमानस्य विष्णु प्रासादाय
 निवृत्तिका प्रादुर्न निमित्त
 र्थ ॥ लक्ष्मि नक्षत्र चामरा
 वत सिन्धुत खड्गित पात
 नवासन के र्थ वस्तु कान
 यित उज्जम खान्त ॥ दव
 योमन्त नन्वा स्यात्ता वज
 लाघमि गृह ॥ आसन ॥
 ॐ आभावादि ॥ ॐ गवृजसर्त
 यश ॥ यथो जलि ॥ ३ ॥ खड्गित
 खान्त ॥ न ॥ व दार्चन ॥ ॐ हं
 जत ॥ १ ॥ शिखरि नन्द ॥ ३ ॥
 धूप दीप जायमाय ॥ ॐ या
 मोक्षी नमो म ॥ धृति ॥ अथ
 धादि ॥ ॥ यन कलमि योजय
 या ॥ ॐ विश्व कर्म रत्न दमा
 न ॥ २ ॥ दस्तार्चन मिथु उज्ज
 म स्वान धूप दीप साय ॥ क

१०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

एवमनात्पुननादादाउलथनाद्यर्थनारुथागम
रुनाकुसनाकालाग रुमिगुद्यतिमुक्तां ॥
दाहनीखननीरुमनेयनमाईनीवहुम्य
वर्षमवतिरुमिचर्यत्रविधस्तथा ॥ इमाईतनी
जानन सुकनालाखननत्रागवायपयित्रासन
रुमिगुद्यतिचरि ॥ ॥ यन्कतभ्याविगुद्यतिः
सामरुय्यासमानुते ॥ निरुयविमयथा ॥
मरुचरनीभापन ॥ गहिनाकमनातथा ॥ य

माउ॥ स्त॥ का॥ ता॥ ति॥ तु॥ ॥ अ॥
 द॥ त॥ ॥ उ॥ दी॥ र्घ॥ य॥ स्त्वा॥ ॥ न॥ व॥ ॥
 पु॥ म॥ ना॥ र्हा॥ ति॥ ॥ ॥ क॥ वा॥ व॥ य॥
 व॥ ॥ वा॥ न्न॥ ल॥ य॥ ज्ञा॥ द॥ कि॥ र्घ॥ ती॥
 ॥ य॥ ज॥ मा॥ ना॥ रि॥ ष॥ क॥ च॥ न॥ द॥ ना॥
 गी॥ र्घा॥ दी॥ ॥ ॥ ॥ इ॥ ति॥ वृ॥ ति॥
 का॥ ना॥ द॥ न॥ दि॥ वि॥ स॥ मा॥ य॥ ॥ ॥

स्थद्वलियदागर्वा खाभादुलसमरिका ॥ ममादगुलनैल्यका नगनात्रवउनु
 धी। एमिसर्वगुलभस्यान यगुलभनइधम ॥ बुद्धभयसतादमि दवागभव
 गलिवच। सभाएविवसदामन्य गवाएभसंरथेवच ॥ एममयनयानेद्याअर का। न
 नयाययद्वध। बाका। दोर्मणुपुतेय दिनभदगवालिना। सर्वमएगुयदसंः
 रत। एलुदुकिनीसयभा। मुद्विदिवक ॥ एगुद्वि ॥ यदासैयधमदुदं। की। लिनी
 भुम्वकिनी। यषिनी। रुलिहंदेव गदासिद्धिमवापूयाते ॥ यदं। लकी। लिनी। वापि
 लंकांवापिद्धिनी। लुनी। यदासैयधतमन्त्र गदायाकासदोलिनी ॥ इस्वयमे
 रुवेधान गदाभक्तिंयकानेयत। अयामानस्यसमिधे दूनद एगननेगते ॥

१
 एतेनमभिविवाया ॥ अथमन्नादानमपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥
 नन ॥ लिङ्गविष्णुतथामुखा वासवायिदिगीध्वनी ॥ अथमन्नादानमपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥
 वध ॥ अथमन्नादानमपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥
 ।यादिवामसवनासुमि कार्याव - वदामाद ॥ द्विजदिवनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥
 वैष्णवममीत्युक्तं ॥ अथमन्नादानमपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥
 ग ॥ विष्णुमन्त्रेणवर्गुलेखनंमदी ॥ नन ॥ अथमन्नादानमपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥
 निमन्त्र्यानि ॥ अथमन्नादानमपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥
 ॥ अथमन्नादानमपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥ कथयामिपुनरुत्पत्तिरित्याम ॥

[illegible]

एतन्नागवाक् ॥ म० मन्त्रुषि काये व ऊत्या नय स्तथे वय । नागवा मुसदा क्रय्य । एया
 एनय वृद्धग ॥ अथवा लानिका वाचि कृपे पस्का न ता क्रुं । नाग वा मुवथ यन्त विध
 नीय व दाम्यरी ॥ स्वत न उक्तथ वृद्ध लिखे त रु मिष मथ ग । प्रकाणी तिय द का र्खे । नख
 य क्क हल मिष ॥ पीभ कर्ने पने कीर ल । तुर्न गय र्थ म सिद्ध । न कृण ना मिश आदि यी ०° ने व व रु
 वृथ ॥ ययु द वा दिरुया नै । मल वीर्ज स मद्ध न त ॥ मथ्य लिख म दाद वी । त न वा मुय य् य् अत ॥
 ०० एभि न १४ ययु जीत रु स्तो वा र्थ व न निष । ने प्र त्थ या द या नो र्क । मा क्क नी वी डा मो र्थ क
 ॥ दे मा दि की त थ क्क यो त् । सि सि अ इ ति मा द द त । वालि व दाय य त्थ र्क । प ऊ या ति द
 क ४ त त ॥ क्क दाने वा मु मयु ल । प ऊ य त्थ न म य्व नी । वा मु क क्क न न त ख निनी । नु र्क क्क ।

त्याग मरुतम् ॥ यण यण गनीयं य खनिगानस्य ग सदा ॥ ददि दानय गते नैव मुञ्जया स निद्वयम्
 धम् ॥ एवममुं रुतं जा ग य ऊजा ना च यो यो दत्तम् ॥ नियर्त्तका न यत्तात्ति क ल्पान् यो यो दत्ता
 रुतम् ॥ समाहिता सभा रत्ना खनिगं वाम्बु क रुतम् ॥ एवा सूर्यं च द्वा सु नी यु का न ना ग वा
 मुर्कम् ॥ नात्रिकं पृस्कं नमो दी वा जी कू पे त दा ग या ॥ का र्छं ता त ह धा नै व मु का द ध्म
 नि का न य म् ॥ ग रु म धे कू कू लु स्या को न य ग रु नि न मी भ ग ॥ पृ रु तै स ख हा ग रु ख नि
 क मी व या के न ॥ पृ स्क त्रि ध्म ध्व नो ग म या वा मु नो थ स उ म्पा त ॥ मु का नी ति य दं का रु
 मी भ नै स ख द लु र्क ॥ अ नि वा या रु धि ख र्क ॥ कू प वा यि त थै व च ॥ ध्वा ऽ गि न स थ य र्क
 म धु ला का ल वा मु न ॥ का र्छं व द व ना र्क ॥ म ध्व यु क्रो य कू ड य म् ॥ द्वा द श ये न का वा

[illegible][illegible]

五

[illegible][illegible]

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

५ १० १५ २०
उत्तममणिनाम् ॥ श्रीस्ववडवाच ॥ वने प्रविष्य यत्नेन आचार्यो गितिरिह मरु ॥ निनयय
द्वेष्टाद्विष्टं दृष्टं वा यो यवाभिलो ॥ वन्दे तोड वदा नैवे ॥ मनले सन्दर्न तथा ॥ सो न कके
तु डी वैव आसे नो नैक वन्दे न ॥ स्वदिनाम धृक् लेवे ॥ विलेस र्भरुना डमा अन्ना
सिसान मखपि ॥ भेरु नावक वा डमा ॥ गुरुद गितिरिह मरु ॥ मेदा को साय निगुभा ॥
अवका सिधे पगुआ यवाना मक्ष मागुरा ॥ ॥ अगभपरी दूषने माद ॥ अग्निद भास्वर्य
धुक् ॥ वक्रो य ० निकेतना ॥ यीति मारुत मं वा ॥ द्धि ने सोखान न म्बिता ॥ वोल
वृद्धे सुखाया ॥ यत्नेनीता सुकतना ॥ तिरुवन्नी कसेरुता ॥ वातसि को विवर्ज्यत ॥
॥ मिष्टक लेकन पटले ॥ समा म्भा ॥ ॥ श्रीभ्यमा वाच ॥ दृक् कान्भी तरुन या कसेरु

या न्निग कर्म नि ॥ याषान तरुन म्भी मा क थो क र्म स वि ए म यत ॥ ॥ वृत्ती क र्म स र्मना
न्म ॥ म्भी न च त्वय स्मिन्ना ॥ स र्गयेत सयी ये स्मा ॥ इ म ले खा नि ला स्मि ना ॥ ॥ कानाम्
स विना र्थसि ॥ अयन्म ॥ ज त म विना ॥ आदि ए न ग्मि से त य ॥ अग्नि ती दा च म्भी वृता ॥
व दूव भू वि व भू व न क व भू व या नि ला ॥ अ ए क्ता वे द्भा या च ॥ का स्थि ता वा प क ल
नि ॥ अ न्य क र्म य य क्ता च ॥ म्भी स्तु ता या च क म वि व ॥ ॥ व र्ज्ये त्सा य यत्ने न ॥ पु म्भी स्तानि
क र्म नि ॥ ॥ व दू ले ना इ वा ॥ अ य ॥ य द्ध क्ता गे द्वा नि ला ॥ ॥ य र्थो न या इ वा य ॥ ॥ ॥
षि द्ध व नि स वि ता ॥ स र्ती र्थ क्ता गे र्म र्ता ॥ दृक् क्ता या वि ग हि ता ॥ न क्षो य द्ध ग म्भी न म्भी
न त टा स्ता म्भी न मा ॥ नि म्भी न म्भी न मा ॥ आदि ए क न म्भी डि ता ॥ स वि त्म नि

लोनिर्दूता विस्तीर्णस्तानिना। सुसुनोवि कवर्गव कर्मधाम मना नुमा॥ यथ
 कोसालिना गम्भा स्वकन कानिना हवित। स्थन न कन गथीना कृष्णवदनिनात
 धम॥ यस्यवर्गवया गम्भा गम्भीयारुसाता पुने। याम्प्रदस्यमिनास्यता नु कनाइ। युकीरि
 ता। विधस्यविदितायीना कृष्णसुदस्यस्यता यथानलरातर्मस्यक खवर्गुगम्प्रयानिना॥ ॥
 गम्प्रवद

१७ नमः ४३ गामकृष्णार्था॥

अथयादहायनवसय
 विधिः॥ हामजा॥ यैवगः
 यच्छायजा॥ सिमनं॥ वी
 हितहन स्नानवाकू २ हा
 मलकू २ अकृतकू २ न
 काकू २ अकृवी हिलवीम
 विधीय ॥ ह्यामं वावीहि रं
 ॥ प्रकाशका॥ साधविमा
 इरवाकू॥ धनपू २ कति
 ॥ अइवात्रमात॥ निजल
 पलवावउ २॥ हनजादि
 तत्र सागा २॥ लीजादिनला
 ह॥ उगत्र साजादिन मे
 ॥ अयधीता ६॥ हनक्ष
 नजादिन धातु ८॥ यवाजा
 दिन वीहि ८॥ रं ४ धाव॥
 लीठिका १॥ लीतनागम
 ॥ लीकायन॥ लीनत्र ७
 ॥ लीयादका॥ लीन अतन
 मूहि ॥ लीउहायसजा १०
 ॥ यैवत्रलेजा॥ निजल
 यउमयत्रयातवकुमि
 यत॥ वाहलअकृत॥ ती
 थलैख॥ कर्ममिला ॥

१०८ नमः श्रीगणेशाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 महावली ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 यथादिश्याय नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 ॥ यथादिश्याय नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 निदवमहीगलु ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 नव ॥ सर्वपाय विनिमृक् ॥ अदित्यकृत् ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 वायेश्यासादिश्याय नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 म्भनविद्युमि ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥

हसा ॥ न जानाति उगल ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 तानि विद्युमि ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥
 ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥ १०८ नमः ॥